कृषि विज्ञान केन्द्र

गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चूरू (राज.)

ई–न्यूज लेटर

नवम्बर, 2024, अंक 7

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर द्वारा दिनांक 16 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक रबी फसलों में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर संस्थागत प्रशिक्षण का आयोजन हुआ जिसमें गांव पूनूसर के 20 किसानों एवं किसान महिलाओं ने भाग लिया । फसलों में पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए मृदा में संतुलित पोषक तत्वों का प्रबंधन करना अति आवश्यक है । प्रशिक्षण के दौरान एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (INM) के विभिन्न अवयवों के अन्तर्गत कार्बनिक एवं जैविक खाद तथा जैव–उर्वरकों का उपयोग रासायनिक उर्वरकों के साथ संतुलित रूप से करने हेतु प्रशिक्षित किया गया । प्रशिक्षणार्थियों को जैविक खाद बनाने एवं जैव उर्वरकों के उपयोग हेतु प्रायोगिक कार्य करवाये गये ।

इस कार्यक्रम के दौरान केन्द्र के सस्य वैज्ञानिक श्री हरीश रछौया द्वारा अनाज भंडारण की सुरक्षित विधियों से संबंधित तकनीकों के बारे में किसानों का अवगत कराया तथा बीज के सरंक्षण, सुरक्षित भंडारण व्यवस्था से संबंधित सभी मापदंडों के बारे में विस्तार पूर्वक समझाया । बीज भंडारण हेतु स्टोरेज बिन बतौर प्रदर्शन भी उपलब्ध करवाये गये ।

पोषाहार वाटिका प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनों का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा अनुसूचित जाति उप योजना (SCSP) अन्तर्गत पोषाहार वाटिका स्थापना विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 16 अक्टूबर 2024 को ग्राम बरलाजसर, तह. सरदारशहर में किया गया । प्रशिक्षण के दौरान कृषक महिलाओं को पोषाहार वाटिका के महत्व एवं उन्नत किस्म के बीजों की जानकारी दी गई साथ ही क्यारी निर्माण विधि एवं बीज बुवाई का प्रायोगिक कार्य करवाया गया । प्रशिक्षण के अन्तर्गत केन्द्र की गृह विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. रमन जोधा ने प्रत्येक घर सब्जी उत्पादन एवं उपलब्धता के उद्देश्य से पोषाहार वाटिका का संतुलित भोजन एवं पोषण में महत्व की विस्तृत जानकारी दी । प्रशिक्षण में 25 किसान महिलाओं ने भाग लिया । प्रशिक्षण उपरान्त कृषक महिलाओं को रबी सीजन में लगने वाले बीज किट प्रदर्शन के रूप में उपलब्ध करवाये गये ।

रबी फसलों में मृदा एवं बीज उपचार विषय पर प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा रबी मौसम में मृदा एवं बीज उपचार विषय पर दिनांक 24 से 27 अक्टूबर 2024 को संस्थागत प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें 23 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने भाग

लिया । इस प्रशिक्षण में केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ (पौध सरंक्षण) श्री मुकेश शर्मा ने रबी मौसम में सरसों, चना, जौ, गेहूँ, मैथी इत्यादि फसलों में मृदा एवं बीज जनित रोगों व कीटों की जानकारी देते हुए उनके प्रबंधन के बारे में बताया । चने की फसल में लगने वाले मुख्य जड गलन रोग से बचाव हेतु ट्राइकोडर्मा से भूमि उपचार करने हेतु कृषकों को विस्तृत जानकारी दी गई । किसानों को बीजों की बुवाई से पूर्व फंफूदीनाशक, कीटनाशक एवं जीवाणु कल्चर से उपचारित कराने का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया ।

सरसों उत्पादन की उन्नत तकनीकी विषय पर चार दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण

राष्ट्रीय खाद्य सरुक्षा मिशन (NFSM)द्वारा प्रायोजित कलस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत तिलहन उत्पादन को बढाने हेतु सरसों उत्पादन की उन्नत तकनीकी के अन्तर्गत 4 दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 24 से 27 अक्टूबर 2024 को किया गया, जिसमें 31 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने भाग लिया । इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ श्री हरीश कुमार रछौया ने चूरू जिले की परिस्थितियों के अनुरूप कम समय में पकने वाली एवं खारे पानी में अच्छा उत्पादन देने वाली किस्मों के चयन, बुवाई से पूर्व भूमि एवं बीज उपचार, खाद एवं उर्वरक प्रबंधन, मुख्य पोषक तत्वों के साथ–साथ, गंधक एवं जिप्सम के प्रयोग, खरपतवार प्रबंधन, एकीकृत कीट व रोग प्रबंधन की विस्तारपूर्वक जानकारी दी ।

नवम्बर माह में किये जाने वाले कृषि कार्य

1. गेहूँ की फसल की बुवाई का उपयुक्त समय नवम्बर के पहले सप्ताह से शुरू हो जाता है । अतः उन्नत किस्मों के बीज, खाद तथा बीज उपचार हेतु उपयुक्त रसायनों की व्यवस्था करें । उन्नत किस्में राज. 4120, राज. 4037, डी.बी.डबल्यू–187 एवं के आर एल–213 है ।
2. जौ की बुवाई के लिए खाद, बीज तथा बीज उपचार हेतु रसायन की व्यवस्था करें । जौ की उन्नत किस्में आर.डी.–2794, आर.डी.2715, आर.डी. 2552 है ।
3. किसान भाई जौ, गेहूँ की बुवाई से 15–20 दिन पूर्व 12 से 14 टन अच्छी तरह सडी हुई गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर की दर से मिट्टी में मिला दें ।
4. मेथी की बुवाई के लिए खाद, बीज तथा बीज उपचार हेतु रसायन की व्यवस्था करें । उन्नत किस्में एएफजी–3, एएफजी–4, एएफजी–5
5. सरसों की फसल में बुवाई से लेकर एक महिने तक लगने वाला कीट आरा मक्खी एवं पेन्टेड बग का भी विशेष ध्यान रखें । ये सरसों की पत्तियों को खाकर काफी नुकसान पहुंचाते है अतः इनका प्रकोप दिखाई देने पर किसान भाई खडी फसल में मैलाथियॉन 5 प्रतिशत पाउडर 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करें या थायोमिथोक्साम 25 WG 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें ।

संकलनकर्ता	संपादक	प्रकाशक
श्री मुकेश शर्मा (पौध सरंक्षण विशेषज्ञ) श्री हरीशकुमार रछौया (फसल उत्पादन विशेषज्ञ) श्री श्याम बिहारी (पशुपालन विशेषज्ञ) श्री अजय कुमावत (बागवानी विशेषज्ञ) श्री रमेश चौधरी (वरिष्ठ अनुसन्धान अध्येता-NICRA)	डॉ. रमन जोधा (विषय वस्तु विशेषज्ञ गृह विज्ञान) Designed श्री सुनील कुमार वी.वी.,स्टैनो Typed श्री ओ.पी.शर्मा, टाइपिस्ट	डॉ. वी. के. सैनी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर,चूरू–I